पंचम अध्याय

** हिंदी के प्रतिनिधि प्रगतिवादी कवि और सुमनजी का तुलनात्मक अनुशीलन **

पंचम अध्याय

हिंदी के प्रतिनिधि प्रगतिवादी कवि और सुमनजीका तुलनात्मक अनुशीलन

प्रगतिशील युग की शुरुआत भारतेंदु युगसे मानी जाती हैं। समाज सुधार, स्वतंत्रता के लिए उद्वेलित इस युग के बारेमें आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैंकि, 'देशभक्ति, परोपकार भावना, मातृभाषा के प्रति आस्था, समाज सुधार की इच्छा, पराधीनता के बंधन से मुक्ती उन दिनों के प्रगतिशील मनोवृत्तियोंके चिन्ह हैं'। 1 अर्थात भारतेंदु युग हिंदी साहित्य के लिए नयी चेतना का द्वार था। अंग्रेजों के जुल्म से त्रस्त भारतीय जनता के मुक्ति के लिए रचनात्मक कार्य होने लगे। आर्थिक उन्नति के साथ साथ भाषा के उन्नति के लिए प्रयत्न किये गये। इस युग की कृतियोंमें सामाजिक असंतोष तथा रुढियों को दूर करने के लिए प्रयत्न किये गये।

द्विवेदी युगमें समाजके साथ साहित्य को जोडनेका प्रयत्न किया गया। साहित्यमें सामाजिक प्रश्नोंको स्थान मिला। छायावाद से उबे कवियों को छायावादी कल्पनासे परे हटकर यथार्थ का अवलोकन करने की दृष्टि मिली। इसी समयमें लिखी गई पंत की अनेक कविताओंका संकलन 'युगांत' के रुपमें आया और पंतने छायावाद के 'युगान्त' की घोषणा की।

हिंदी साहित्यमें सन 1936 के उन्मूलन को दृष्टि में रखते हुए एक नवीन युग की स्थापना हुई। छायावादी युग की समाप्ति के पश्चात एक नयी सामाजिक चेतना को लेकर जिस काव्य युग की प्रतिष्ठा हिंदी साहित्यके क्षेत्रमें हुई, उसके कृतित्व को सामान्यतः प्रगतिवादी अथवा प्रगतिशील काव्य इन नामोंसे पुकारा जाता है।

प्रगतिवादी धारा को अपनानेवाले प्रमुख कवि है - पंत, दिनकर, निराला, नागार्जुन, मुक्तिबोध, केदारनाथ अग्रवाल।

सांप्रत इस पाँचवे अध्यायमें हम प्रगतिवादी कवि और सुमनजी के काव्य का समग्र रुपसे विवेचन करेंगे। प्रगतिवादी कवियोंने, किसान, दलित, श्रमिक और उपेक्षित वर्ग, नारी इसी सामाजिक विषयोंपर अपनी लेखनी चलाई। साथ ही पूँजीवादी, सामंतवादी, साम्राज्यवादियों के खिलाफ क्रंति की भावना जनता में जागृत करने का प्रयास किया।

---

1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी - हिन्दी साहित्य - पृष्ठ 396

नागार्जुन और डॉ. सुमन -

प्रगतिवादी कवियोंमें नागार्जुन का प्रमुख स्थान है। नागार्जुन का कवि व्यक्तित्व उनकी रचना का प्रतिबिंब है। उन्होंने कला के वर्ग स्वरुप को प्रस्तु कर कला क्षेत्रमें नया परिवर्तन किया। लोकजीवन के प्रति उनकी दृढ आस्था है। 1953 में 'युगधारा' उनका प्रथम काव्यसंग्रह हैं। इस संग्रहमें महान पुरुषोंके प्रति श्रध्दा के भाव वर्णित है, जना के दुख-दर्द की कहानी हैं और व्यंग्य के माध्यमसे पूँजीवादी समाज सभ्यता के विरुध्द विद्रोह।

इसके अलावा उन्होंने प्रकृति सौंदर्य का व्यक्त करनेवाली, प्रणयी भावनासे ओतप्रोत तथा सामाजिक, आर्थिक विषयोंको लेकर कविताएँ लिखी। सरल और स्पष्ट अभिव्यक्ति नागार्जुन की कवित्व की शक्ति हैं। कला और शिल्प के मोह से दूर रहकर कृत्रिमता को त्यागकर लोकजीवन की अभिव्यक्ति की हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य की कवितामें सर्वाधिक प्रशंसित कविता हैं 'बादल को घिरते देखा हैं' इसमें हिमालय की गोंदमें बसी झीलोंमें क्रीड़ा करते हंसो और हरी शैवालों के चादरपर प्रणयरत चकवा चकवी तथा अपपने ही नाभी के सुगंध से पगलाएँ कस्तुरी मृग का वर्णन किया हैं -

'निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो होकर
अपने उपर चिढ़ते देखा हैं
बादल को घिरते देखा हैं।' 1

वसंत ऋतु के स्वागत के बारेमें कवि कहता हैंकि -

'वृध्द वनस्पतियों की बूढी शाखाओंमें
पोर-पोर टहनी टहनी का लगा दहकने
से निकले मुकलों के गुच्छे गदराये
अलसी के नीले फूलों पर नभ मुस्काया।' 2

कवि शिवमंगलसिंह सुमन की रचनाओंका प्रारंभ छायावाद के उत्तरकालीन युगमें हुआ। बदली हुई परिस्थितियोंको देखकर सुमनजी ने नये पथ का चुनाव किया। वह पथ हैं प्रगतिवाद और प्राकृतिक सौंदर्य, विषमता, क्रांतिकारी, राष्ट्रप्रेमी कविताएँ।

---

1. नागार्जुन - रुपांबरा - पृष्ठ 278-279
2. नागार्जुन - सतरंगे - पृष्ठ 31

जीवन के गान में वे कहते हैंकि -

प्राची क्षितिज के द्वार पर
जब चार आँखे हो गई
देखा सितारेदार साडी
झिलमिलाती थी नई
जिसमें उठता उषा का राग रंजित गात था
अति स्पष्ट पडती थी सुनाई
निर्झरों की ध्वनि विकल
थी मल रहीं पलके उषा
मुख धो रहे ये सुमन दल
तृणतरु, कुसुम कलि, पल्लवों
का गात सद्य स्नात था
कैसा मधुर सुप्रभात था।' 1

इसके अलावा ऋतुओंका वर्णन जो सुमनजीकी काव्य की एक विशेषता हैं। सुमन जी की कवितामें वसंत की छटा पगपग पर दिखाई देती हैं। कविने वसंत का अत्यंत विशद वर्णन किया है। जीवन के गान में कवि ने क्रांतिकारी भावोंके माध्यम से वसंत वैभव का वर्णन किया हैं -

'जब सजी वसंती बाने में
बहने जौहर गाती होंगी
कातिल की तोपे उधर
इधर नवयुवकों की छाती होगी
तब समझूँगा आया वसंत
जब विश्व प्रेम मतवालों के
खूँ से पथपर लाली होगी
जब रक्त बिंदूओंसे सिंचित
उपवन में हरियाली होगी।' 2

सुमनजी के तरह नागार्जुन जी ने भी ऋतपरक अनेक कविताएँ लिखी। वसंत के आगमन पर चहुँ ओर वातावरण उल्लासमय हो जाता हैं। इसी तरह शरद पूर्णिमा अब के इस मौसम में 'झुक आये कजरारे मेघ' कविताओंमें नागार्जुन का सहज प्रकृति चित्रण देखने को मिलता है।

उन्होंने चाँद का चित्र इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 28
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 92

'काली सप्तमी का चाँद
पावस की नमी का चाँद
तिक्त स्मृतियोंके विकृत वाष्प
जैसे सूँघता है चाँद
जागता था, विवश था
अब ऊँघता है चाँद
क्षीण दुर्बल कलाधर की कांति प्रतिपल खो रही है
सिमट आया प्रभाव मंडल
प्रतिभा की परिधि छोटी हो रही है।' 1

तो वर्षा के बाद धूप के खिलते ही पत्ते भी खिल उठते हैं। धूप का जादू उनके सिर चढके बोलता हैं -

'वर्षा में अनावृत्त धुले पात
फीके थे कल, आज खुले पात
धूप के जादू में खिले पात
मस्तानी हवामें खिले पात
जादुई साँयेमें ढले पात
भूल गये दाह दिन भले पात।' 2

नागार्जुन प्रकृति को सहज रुपमें देखते हैं। प्रकृति नटी को विविध रुपोंमें देखकर कवि का मयूर मन नृत्य करने लगता हैं और उसको विभिन्न भावनोंसे कवितामें सृजित करता हैं। उदा.

'धिन धिन धा धमक
 मेघ बजे
दामिनी यह गयी दमक
 मेघ बजे
दादूर का कंठ खुला
 मेघ बजे
धरतीका हृदय खुला
 मेघ बजे।' 3

कवि सुमनजी ने प्रकृति सौंदर्य के विविध पक्षोंका विविध रुपोंके आधारपर चित्रण किया हैं। जेसे आलंबन के रुपमें, संदेश वाहक के रुपमें, प्रतीकोंके रुपमें, तथा अलंकार के रुपमें चित्रण किया हैं।

---

1. नागार्जुन - प्यासी पथराई आँखे - पृष्ठ 4।
2. नागार्जुन - तुमने कहा था - पृष्ठ 8।
3. डॉ. सत्यनारायण - नागार्जुन कवि और कथाकार से उधृत - पृष्ठ

'विश्वास बढ़ता ही गया' काव्यसंग्रह में 'आग्रह' कवितामें कविने क्रांतिकारी प्रतीकोंका बड़ा सुंदर वर्णन किया हैं। जैसे -

'ठूँठ तरु के कोटरों में
वृध्द पिध्द कराहते निरुपाय
दग्ध दावा की दहकमें उग रहे अंकुर सुनहले
कुलबुलाते नीड़ बन प्रच्छाया।' 1

वर्षाऋतु का वर्णन करते सुमन वर्षा के बाद भूतकाल की बात सोंचते हैं, वर्षा के न आनेसे क्या क्या आपदाएँ आ सकती है, इसका वर्णन कवि इसप्रकार करते हैं -

'जल जाती आशाएँ कितनी जल जाते किसान का जीवन
जिसने बड़ी मनौती, मानी आँखें फाड़ फाड़ साँसे गिन
सूखे खेत पड़े होते ऊसरको देते हुए चुनौती
उसकी आँखोंकी कोरों से टपका करती नित्य औ रोती
यदि न बरसते -
व्यर्थ ही जल जाते इन जोते गोड़े श्रमसीकर।' 2

इसके अलावा नागार्जुनजी ने यथार्थ का वर्णन करनेवाली कविताएँ लिखी। नागार्जुन सबसे पहले सामान्य जन हैं, और बादमें रचनाकार। एक सामान्य आदमी की हैसियत से जीवन जीनेवाले रचनाकार का दीन-हीन, दलित वर्ग के कष्टों, किसान मजदूर संघर्षों और भूखे प्यासे लोगोंकी पीड़ाओं के साथ और उतनी ही गहराई के साथ महसूस करना स्वाभाविक हैं। सही मायनेमें कवि ने इस देश के शोषित प्रताड़ित गरीब लोगों को वाणी दी हैं। किसान मजदूर और निम्नस्तर का शोषण करनेवाली ताकदोंके वे विरोधी रहे और व्यवस्थामें परिवर्तन लाने के लिए क्रांति का आवाहन करते रहे। 'नागार्जुन जिते सचेत रुपसे क्रांतिकारी है, उतने ही अचेत रुप से भी। उनका क्रांतिकारीत्व एक ओर साम्राज्यवाद, सामंवाद और पूँजीवाद की प्रखर आलोचना में प्रकट होते है, दूसरी ओर वह उनकी कला द्वारा हिंदी जातियता के स्तरपर विभिन्न जनपदों की श्रमिक जनता को एकताबध्द करनेमें प्रकट होता हैं।' 3

नागार्जुनजी ने जीवनके भिन्न भिन्न संदर्भोंमें आज की वास्तविकताओंको उन्होंने अपनी रचनाभूमि बनाई हैं। कहींपर सामाजिक नियम, राजनीति, नेतालोग, आर्थिक वैषम्य, शोषित लोग, किसान मजदूर की दीन हीन दशाओंका चित्रण किया हैं। देखिए -

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 42-43
2. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 42-43
3. डॉ. सत्यनारायण - नागार्जुन कवि और कथाकार से उधृत - पृष्ठ 29

'जमींदार हैं, साहुकार हैं, बनिया हैं व्योपारी हैं
अंदर अंदर विकट कसाई बाहर खद्दरदारी हैं
सब घुस आए भरा पड़ा है भारत माता का मंदिर
एक बार जो फिसले अगुआ, फिसल रहे हैं फिर फिर फिर।' 1

साम्वाद के प्रति आकर्षण के कारण ही नागार्जुन की चेतना विश्व चेतना की ओर बढती हैं। निम्न मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों को कविने चित्रित किया है, उसीतरह अकाल के बाद फैली भूखमरी का चित्रण यथार्थ दृष्टिसे किया हैं -

'कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनोंतक कानी कुतिया, सोई उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालात रही शिकस्त।' 2

अपने काव्य का मूल स्त्रोत बनाया। सामाजिक विषमता, सर्वहारा वर्ग की दयनीय दशा, भूखमरी अकाल का हृदय द्रावक वर्णन अपने 'मिट्टी की बारात', प्रलयसृजन काव्यसंग्रहोंमें किया हैं। प्रलयसृजन का एक उदा. देखिए -

'ये जीवत शव भी मानव है
मूक त्रस्त पामाल
चील्ह नोचती आँखे गीदड़
खाते जीवित खाल
हन्त हमारे ही भाई ये
दीन हीन लाचार
यों सडकोंपर सडी होती
यदि अपनी सरकार।' 3

शोषितों को देखकर सुमनजी कहते हैंकि -

'आज शोषक शोषितों में हो गया जग का विभाजन
अस्थियों के नींव पर अकड़ा खड़ा प्रासाद का तन
धातु के कुछ ठीकरोंपर मानवी संज्ञा विसर्जन
मोल कंकड़-पत्थरों के बिक रहा है मनुज-जीवन।' 4

शोषकों को वह बताते हैंकि, -

'घृणित लुटेरे शोषक

---

1. डॉ. सत्यनारायण - नागार्जुन कवि और कथाकार से उधृत - पृष्ठ 33
2. नागार्जुन - तालाब की मछलियाँ - पृष्ठ 102
3. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 80-81
4. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 4-5

समझा पर धन हरण बपौती
तिनका तिनका खड़ा दे रहा हैं
तुझको खुली चुनौती
तेरे कारण मिटी मनुजता
माँग माँग कर रोटी
नोची श्वान-श्रृगालों ने
जीवीत मानव की बोटी।' 1

इसके व्यतिरिक्त नागार्जुनजी ने राष्ट्रीय प्रेम से ओतप्रोत कविताएँ लिखी। जनतामें भी देशप्रेम की भावना जागृत करना चाहा। कवि स्वभावसे ही विद्रोही होता हैं। परंपरागत रुढियोंको वह स्वीकार नहीं करता। कवि जनता को गुलामी, दासता, शोषणों का बलि नहीं बना सकता। जनतामें जागृति लाना चाहता हैं। उन्हें चेतना का शंखनाद सुनाकर अपनी गिरी हुई स्थितिसे उपर उठने की प्रेरणा देता हैं। शोषकों और अत्याचारियों से संघर्ष के लिए जनता को उकसाता हैं। निराश नहीं, किंतु आशा और समय के पुकार के स्वर वह साहित्यद्वारा जनतामें भरता हैं।' 2

जिस गाँव की मिट्टीमें कवि पालित पोषित हुए उससे लेकर समूचे देश के कण-कणसे उनका गहरा लगाव हैं। देखिए -

'खेत हमारे, भूमि हमारी, सारा देश हमारा है
इसीलिए तो हमको, इसका चप्पा-चप्पा प्यारा हैं।' 3

कवि नागार्जुन कहते हैंकि, राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक हैं, राष्ट्रीय गौरव और उसके सम्मान को समान रुपसे स्वीकार किया जाए और राष्ट्रीय नेताओं को सभी क्षेत्रोंमें उचित सम्मान दिया जाए।

'स्थापित नहीं होगी क्या
लाला लजपतराय की प्रतिमा मद्रास में?
दिखाई नहीं पड़ेंगे लखनऊ में सत्यमूर्ति?
सुभाष औ जे.एम.सेन गुप्त क्या सीमित रहेंगे
भवानीपूर और श्याम बाजार की दुकानोंतक, तिलक
नहीं निकलेंगे पूना से बाहर?
खुदीराम बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद
पाएँगे स्थान नहीं लोक सभा के कक्षमें।' 4

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 43
2. डॉ. सत्यनारायण - नागार्जुन कवि और कथाकार - पृष्ठ 38
3. नागार्जुन - प्यासी पथराई आँखे - पृष्ठ 13
4. नागार्जुन - प्यासी पथराई आँखे - पृष्ठ 13

एक सच्चे देशभक्त के यहाँ राष्ट्रीयता एवं देशहित प्रथम होता है, वैचारिक प्रतिबध्दता नहीं। 'तालाब की मछलियाँ' कवितामें कवि नागार्जुन कहते हैं -

'आज तो मैं दुश्मन हूँ तुम्हारा
पुत्र हूँ भारतमाता का
और कुछ नहीं हिंदुस्तानी हूँ महज
प्राणों से भी प्यारी है मुझे अपनी भूमि।' 1

'तर्पण' कविता के माध्यमसे कवि ने गांधीजी की हत्यापर क्षोभ प्रगटकर उनके स्वप्नों को जागृत करने का आश्वासन दिया। गांधीजी की मृत्युपर उनके हत्यारे को 'मानवता का महाशत्रु' घोषित किया। 'युगधारा' में नागार्जुन लिखते है -

'जिस बर्बर ने कल तुम्हारा खून पिया
वह नहीं मराठा हिंदू है, वह प्रहरी है
स्थिर स्वार्थों का, वह मानवता का महाशत्रु।' 2

कवि सुमन जी के काव्यमें भी राष्ट्रप्रेम कूट कूटकर भरा हैं। 'जीवन के गान' का उदाहरण देखिए -

'माँ कबसे खड़ी पुकार रही
पुत्रो। निज कर में शस्त्र गहो
कह दो अब हमको सह्य नहीं
मेरी माँ कहलाए चेरी
लो आज बज उठी रणभेरी।' 3

कवि अपने काव्यके ज़रीए मजदूर और किसानोंको आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। कवि के मनमें विश्वास हो गया कि, दिन दूर नहीं आजादी का -

दुश्मन का दुर्ग धसकता है
तुम बढ़े चलो।' 4

इसलिए कवि उन्हें चेतावनी देता हैकि,

'तुम गरजो आज प्रलय होगी
शोषक वर्गो की क्षय होगी
दुनिया के कोने कोने से
मजलूमों की जय जय होगी।' 5

---

1. नागर्जुन - तालाब की मछलियाँ - पृष्ठ 88
2. नागार्जुन - युगधारा - पृष्ठ 29
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 42
4. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 93
5. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 93

राष्ट्रीय नेताओं के प्रति सुमनजी को अपार श्रध्दा थी। गांधीजी के बारेमें अपना श्रध्दाभाव प्रकट करते हुए वे कहते हैंकि -

'हे अमरकृती दृढवती
शांति समता के मुक्त उसास विकल
दांभिक पशुता के खंडहर में
तुम जीवन ज्योति मशाल लाये
चले रहे युगों की सीमापर
परचरण अटल।' 1

2. सुमित्रानंदन पंत तथा डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन

सुमित्रानंदन पंत ने की काव्यमें छायावादी युग समाप्ति की घोषणा की। 'युगांत' और 'युगवाणी' से कवि समकालीन युग को वाणी देने लगा, उसका चरम विकसित रुप हैं, 'ग्राम्या'। इन्हीं रचनाओंमें कवि की प्रगतिवादी काव्य कला मुखरित हुई है, उनके काव्यमें भी प्रगतिवादी विशेषता पायी जाती है, जिसतरह हमने सुमन की काव्य की प्रगतिवादी विशेषताओं की चर्चा कर चुके हैं।

कवि सुमन की तरह पंतजी ने भी परंपरागत जीवनमूल्यों, एवं मान्यताओंको दुत्कारकर नवीनता की प्रशंसा की हैं। इसलिए 'युगान्त' में वे कहते हैंकि -

'द्रुत झरो जगत् के जीर्ण पत्र
हे स्रस्त ध्वस्त हे शुष्कशीर्ण
हिम ताप पीत मधुवात भीत
तुम वीतराग, जड़ पुराचीन।' 2

'युगान्त' संग्रह की यह पहली कविता हैं, जिसमें कवि का तेवर प्रखर एवं उर्जस्वित हैं। पंतजी बड़ी आकुलता एवं प्रार्थना भाव के साथ निष्प्राण प्राचीनता के प्रति अपना सहज आक्रोश प्रकट किया हैं।

उसीतरह उनकी काव्य दृष्टि किस तरह एक नये पथपर आरुढ़ हो रही थी, इसका एक स्पष्ट संकेत 'गा कोकिल' कवितामें मिलता हैं -

'गा कोकिल, बरसा पावक कण
नष्ट भ्रष्ट हो जीर्ण पुरातन
ध्वंस भ्रंस जग के जड़ बंधन

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 87
2. डॉ. रामजी पांडे - सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व और कृतित्व से उधृत - पृष्ठ 65

पावक पगधर आवे नुतन
हो पल्लवित नवल मानवपन।' 1

कवि ने आलोच्य कृतिका नाम 'युगांत' रखकर सामंत एवं पूँजीवादी युगके अंत की घोषणा की हैं। कवि का मत हैंकि सामंत युग और पूँजीवादी युग की विकृतियाँ मनुष्य के स्वाभाविक विकास में बाधा उत्पन्न कर देती हैं। जैसे -

'इस मिथ्या वादविवाद तर्क
शत रुढ नीति, शतधर्म द्वार
शिक्षा, संस्कृति, संस्था, समाज
यह पशुमानव का अहंकार।' 2

पंतजीने 'युगांत' में पहली बार श्रमजीवी वर्गको अपने काव्य का विषय बनाया। पंतने श्रमिक वर्ग की अभावग्रस्तता, विपन्नता, दुर्दशा का चित्रण अपने काव्यमें किया।

कवि को पूरा विश्वास हैंकि, विश्व प्रकृति की तरह मानव जगमें भी एक अखंड मधुर व्यापकता अवश्य आयेगी। कवि वर्तमान मानवजीवन के दुख दैन्य को कातरवाणी देता है और फिर भावी जीवन मंगल के प्रति उसका दृढ विश्वास हैं।

ये डूबेगी सब डूबेंगी
पा नव मानवता का विकास
हँस देगा स्वर्णिम व्रज लौह
छू मानव आत्मा का प्रकाश।' 3

युगवाणी में कवि ऐसी दुनिया की कल्पना करता है जहाँ विचार कर्ममें कोई विरोध न हो अर्थ के आधार मनुष्य के श्रम का शोषण न हो, वर्गहीन समाज हो -

'श्रेणी वर्ग में मानव नहीं विभाजित
धन बलसे हो जहाँ न जन शोषण।' 4

कवि सुमन ने भी अपनी कविताओंमें प्राचीन रुढियाँ जातिभेदपर तीखा व्यंग्य किया, वह भी ऐसी समाजकी रचना चाहते थे जिसके मूलमें समता की चेतना हो। इसलिये वे कहते हैंकि -

चिर वेदना अभिभूत मैं

---

1. डॉ. रामजी पांडे - सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व और कृतित्व से उधृत - पृष्ठ 65
2. डॉ. रामजी पांडे - सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व और कृतित्व से उधृत - पृष्ठ 66
3. डॉ. रामजी पांडे - सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व और कृतित्व से उधृत - पृष्ठ 66
4. सुमित्रानंदन पंत - चिदंबरा - पृष्ठ 14

नव क्रांति का नवदूत मैं
होगा बदलना जीर्ण जब
यह एक आस न खो सका
मैं तो निराश न हो सका।' 1

समाज की परिस्थिति देखकर सुमनजी का मन विषण्ण बनता है, ऐसे विषम परिस्थितिमें अत्याचार से ग्रस्त मानवके लिए शिक्षा का क्या उपयोग हैं -

'क्या शिक्षा का उपयोग यहाँ
है हाय हाय का शोर जहाँ
मेरी आँखो के आगे तो
जगती के सुख दुख मँड़राते
मुझको यह पाठ नहीं भाते।' 2

कवि सुमन अन्याय, शोषित का दुख समाप्त करनेके लिए जनता को बलिदान के लिए आवाहन करता है-

'जो दूध दूध कह तड़प गए
दाने दाने को तरस तर
लाठियाँ गोलियाँ जो खाईं
वे घाव अभी तक बने रहे
उन सबका बदला लेने को
अब बाँहे फड़क रही मेरी
लो आज बज उठी रणभेरी।' 3

ग्राम्यामें सुमित्रानंदन पंत कहते हैंकि -

'मनुष्यत्व के मूल तत्व ग्रामों में ही अंतर्हित
उपादान भावी संस्कृति के भरे यहाँ है अविकृत।' 4

कवि को पूरा विश्वास हैंकि, वर्ग, जाति आदि जटिल परिधिसे मानवता अवश्य बाहर निकलेगी। जैसे -

'जाति वर्ण की श्रेणी वर्ग की
तोड़ भित्तियाँ दुर्धर
युग युग के बंदी गृह से
मानवता निकली बाहर।' 5

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 35
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 36
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 43
4. सुमित्रानंदन पंत - ग्राम्या - पृष्ठ 14
5. सुमित्रानंदन पंत - ग्राम्या - पृष्ठ 12

ग्राम्या में कुछ व्यंग्यात्मक रचनाएँ भी हैं। बनियों की स्वाभाविक वृत्तिका चित्रण करते हुए कवि कहता हैं -

'टूट गया वह स्वप्न वणिक का
आई जब बुढ़िया बेचारी
आध पाव आटा लेने
लो लाला ने फिर डंडी मारी।' 1

'ग्रामदेवता' रचनामें कवि ने कवि ग्रामीणोंके रुढिवादी संस्कारों के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया हैं। पत्थर के देवताओं के प्रति अंधविश्वास को कवि व्यंग्य के रंग में अंकित करता है -

'राम राम हे ग्राम्यदेवता यथानाम
शिक्षक हो तुम, मैं शिष्य
तुम्हें सविनय प्रणाम
विजया महुआ, ताडी गांजा पी सुबह शाम
तु समाधिस्थ नित रहो, तुम्हें जग से न काम।' 2

कवि सुमन मेहनत पर विश्वास रखते हैं, नमाज, पूजा, प्रार्थना, पाठ इसमें समय गवाना व्यर्थ है, उससे लोगों के पेट की आग नहीं बुझ सकती, इसलिये कवि कहते हैं -

'क्या जीवन व्यर्थ गँवाना है
कायरता पशु का बाना है
इस निरुत्साह मुर्दा दिलसे
अपने तन से अपने तन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो।' 3

श्री पांडेजी लिखते हैं कि, 'सुमित्रानंदन पंतने अर्थनीति, शोषणनीतिका, रुढियों का विरोध किया। कवि अपनी रचनामें मानवीय मूल्यों की स्थापना का संदेश देता रहा।' 4

सुमनजी की तरह पंत भी आशावादी हैंकि, शोषण, दमन एवं अन्याय का यह चक्र एक ना एक दिन समाप्त होगा। साम्यवादके बारेमें कवि कहता हैं-

'अस्त आज साम्राज्यवाद, धनपति वर्गों का शासन
साम्यवाद के साथ स्वर्ण युग करता मधुर पदार्पण
मुक्त निखिल मानवता करती मानव का अभिवादन।' 5

---

1. सुमित्रानंदन पंत - ग्राम्या - पृष्ठ 67
2. सुमित्रानंदन पंत - ग्राम्या - पृष्ठ 60
3. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 91
4. श्री. अरविंद पांडे - हिंदी के प्रमुख कवि रचना और शिल्प - पृष्ठ 68
5. सुमित्रानंदन पंत - संयोजिता - पृष्ठ 18

सुमनजी रुसमें जो साम्यवादी क्रांति हुई उसके बारेमें कहते हैं कि -

'छिन्न भिन्न फासिस्तवाद की चर्बी चर्चित
जीर्ण शीर्ण साम्राज्यवाद की रुई जर्जरित
इसे मिल गई फिर क्या कहना
अत्याचार विषमता के विषधर को भस्मसात कर देने
लाल लाल लपेटों की लपलप जिव्हा लपकी ।'

3. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन -

साहित्यकार तीन प्रकार के होते हैं - प्रथम जिनका जीवन महान न होकर साहित्य महान होता है, दूसर जीवन महान होता है, साहित्य महान नहीं होता, तीसरा जिनका जीवन और साहित्य दानों महान होते हैं। इस श्रेणीमें तो कोई निराला ही आ पाता है, जीवन और साहित्य दोनों उच्च स्तरके होते हैं। महाकवि निराला इस वर्ग की विभूति हैं। श्री. सुरेशचंद्र निर्मल निराला के प्रगतिशील विचारधाराके बारेमें लिखते है - 'सन 1938 के पश्चात की निराला की सभी रचनाएँ प्रगतीवादी हैं। निराला ने समय की गति को पहचानकर अपनें काव्य को नया मोड़ दिया। इस क्षेत्रमें निराला व्यंग्यकार बने। इन जैसे अक्कड़, निर्भीक, मस्तमौला कवि ने व्यंग्य को अत्याधिक शक्तिशाली बनाकर निखार दिया।' 1

'निराला' काव्यमें जहाँ शक्ति और पौरुष का अदम्य प्रवाह है, वहाँ ओज और बल सामीके बंधन तोड़ता प्रतीत होता हैं। प्राचीन शौर्य का स्मरण करते हुए कवि जागरण का संदेश और बढ़ने के लिए आवाहन करता हैं। जैसे -

'जागो फिर एक बार
सिंहनी की छीनता रे शिशु कौन?
कौन भी क्या रहती वह
रहते प्राण रे अजान।' 2

इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़नेवाली श्रमिक युवती का जो शब्द चित्र कवि निराला ने प्रस्तुत किया, वह सामाजिक विषमता व समाज की आर्थिक असमानता का सच्चा दर्पण हैं। इसीप्रकार भिक्षुक तथा उसके बच्चों की दयनीय दशा और उनके प्रति सहानुभूतिमें कवि के हृदय की व्याकुलता व्यक्त हुई हैं।

---

1. सुरेशचंद्र निर्मल - आधुनिक हिंदी काव्य एवं कवि - पृष्ठ 134
2. सुरेशचंद्र निर्मल - आधुनिक हिंदी काव्य एवं कवि से उधृत - पृष्ठ 42

देखिए - 'वह आता
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा है लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता।' 1

निरालाजी की धारा कविता मुक्ति का आख्यान करती हैं। धारा विकास के गति का ही प्रतीक हैं, जिसे कोई शक्ति नहीं रख सकती। निराला नाटकीय ढंगसे इसकी व्यंजना करते हैं,

'सुना रोकने उसे कभी कुंजर आया था
दशा हुई क्या फिर उसकी
फल क्या पाया था
तिनका जैसा मारा गारा
फिरा तरंगोंमें बेचारा
गर्व गँवाया हारा।' 2

निराला अपनी मुक्ति की इच्छाको अनेक वर्णनोंमें प्रस्तुत करते हैं। कवि प्राचीनता से मुक्ति पाना चाहता हैं -

'आँखो में नव जीवन का अंजन लगा पुनीत
बिखर झर जाने दे प्राचीन
जीर्ण शीर्ण जो दीर्घ धरामें प्राप्त करें अवसान
रहे अवशिष्ट सत्य जो स्पष्ट।' 3

सभी प्रगतिवादी कवि स्वतंत्रता के लिए लालायित थे। नवयुग के प्रति सुमनजी कहते हैकि -

'नवयुग के स्वर्णिम विहानको
रोक नहीं सकते उलूक गन
छोटे मोटे आघातों से
हार नहीं सकता मेरा मन।' 4

स्वतंत्रता के लिए सुमनजी कहते हैंकि -

'स्वतंत्रता की आई बेला
गली गली में, डगर डगर में

---

1. डॉ. रामकृष्ण त्रिपाठी - आधुनिक कवि निराला से उधृत - पृष्ठ 33
2. डॉ. रामकृष्ण त्रिपाठी - आधुनिक कवि निराला से उधृत - पृष्ठ 34
3. डॉ. रामकृष्ण त्रिपाठी - आधुनिक कवि निराला से उधृत - पृष्ठ 35
4. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 15

लिए हथेली पर सिर
आगे बढा शहीदोंका जब मेला।' 1

सुमनजी की तरह निराला के काव्यमें भी स्वतंत्रता की ध्वनि गूँजती हैं।

'सोचो तुम
उठती जब नग्न तलवार
है सवतंत्रता की कितने ही भावोंसे
याद दिला घोर दुख दारुण परतंत्र का
फूँकती स्वतंत्रता निज मंत्र से जब व्याकुल कान
कौन वह सुमेरे रेणु जो न हो जाय।' 2

जो मानव के हितमें नहीं हैं, मनुष्य और समाजके विकास मे बाधक है, उसके प्रति निराला घृणा व्यक्त करते हैं, व्यंग्य की कठार वृष्टिसे इसकी अभिव्यक्ति करते हैं। 1927 ई.में उन्होंने 'रेखा' कविता में समाजपर व्यंग्य करते हुए आत्मभर्त्सना में लिखाया -

'क्षमा करो, दया करो, धर्म था कर्म था क्रंदन
सुख मौन एक महाज्ञान
पूर्वजों के मान पर दंभ अस्तित्व था
दास्य भी जीविता, अपने से इर्ष्या
प्रभु भक्ति थी, शक्ति थी जर्जर,
पर अविचल याद पहर,
जिवन पर निंदा थी, धर्म ढोंग निष्ठा दृढ
दूसरे की शक्ति थी, अपना उपाय हक
अंध परंपरा वश एक लक्ष्य जीवनका
मृतरीतिनीतियाँ ही अपना उध्दारपथ।' 3

कवि सुमनजी ने सोये हुए समाज का वर्णन मार्मिकता से किया हैं -

'स्नेह न पाया ज्योति न जानी
अंधकार से लड़े, मिलाए
घर घर दीप जलाने में ही मिले
जिनेक जीवन दीप बुझ गए
मूक उदासी भरे गृहोंपर

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 29
2. डॉ. छोटेलाल दीक्षित - आधुनिक काव्यमें सौंदर्य बोधके विविध आयाम से उधृत - पृष्ठ 111
3. डॉ. छोटेलाल दीक्षित - आधुनिक काव्यमें सौंदर्य बोधके विविध आयाम से उधृत - पृष्ठ 111

दृष्टि किसी ने डाली
फिर आ गयी दिवाली।' ।

सामंत के आतंक, सामाजिक, राजनीतिक, धर्म कर्म के जटिल बंधन इसकी व्यंजना निरालाजीने पैनी दृष्टिसे की हैं। 'उनका सौंदर्य बोध इतना तेज हैकि उनकी दृष्टिसे व्यक्ति और सामाजिक जीवन की वे विविध स्थितियाँ ओझल नहीं हो पाई, जो समाज के लिए हितकारक नहीं हैं। शोषण करनेवाले व्यक्ति या समाज के प्रति उनकी समस्त कविता खड़ी थी।' 2

ब्राम्हण, धार्मिक, कवि, लेखक सभी सामंत का किस प्रकार पोषण करते है निराला की तीखी दृष्टिसे यह ओझल नहीं हो पाया। परंपरा से सामंत का समाज ही जनता का आदर्श रहा है। सामंत लोग धर्म के नामपर सामान्य जनता को छलता रहा। खून की नदियाँ बहाता रहा हैं। अतीत के इस सामंती समाज की बखिया उधेड़ते हुए कवि निराला कहते हैंकि -

'राजे ने अपनी रखवाली कीकिला बना कर रहा
बड़ी बड़ी फौजें रखी, चापलूस कितने सामंत आए
मतलब की लकडी पकड़े हुए, कितने ब्राम्हण आए
पोथियों में जनता को बाँधे हुए कवियों ने उनकी
बहादूरी के गीत गाए, लेखकोंने लेख लिखे
धर्मको बढ़ावा रहा, धोखेसे भरा हुआ
लोहा बजा धर्म के नामपर खून की नदी बही
आँख कान मूँदकर जनताने डुबकियाँ ली
आँख खुली राजनें अपनी रखवाली की।' 3

सुमन भी अपने काव्यमें पूँजीवादी साम्राज्यवादियों को कोसते हैं -

'तेरे कारण मरघरस्त
जल उठा हमारा नंदन
लाखों लाल अनाथ
लुटा अबलाओंका सुहाग धन
झूठोंका साम्राज्य बस गया
रहे न न्यायी सच्चे

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 39
2. डॉ. छोटेलाल दीक्षित - आधुनिक काव्यमें सौंदर्य बोधके विविध आयाम - पृष्ठ 114-115
3. डॉ. छोटेलाल दीक्षित - आधुनिक हिंदी काव्यमें सौंदर्य के विविध आयाम से उधृत - पृष्ठ 114

तेरे कारण बूँद बूँद को
तरस मर गए बच्चे।' 1

निरालाजी सदियों से चले आई इस दास्तान का वर्णन करते हैंकि -

'चोट खाई हुई रामजी के राज से
शूद्रोंको मिला नहीं जिनसे कुछ भी कही
ढाढस बँधाया मैंने मीठे शब्द कह कहकर
देखती रही वह आँसुओं की आँखों रह रहकर।' 2

इसलिए कवि जनसामान्योंके आत्मा को जागृत करना चाहता हैं -

'जल्द-जल्द पैर बढाओ, आओ आओ
आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी पासी चमार तेली
खोलेंगे अँधेरे का ताला।' 3

कवि का यह भावबोध उसकी सच्चाई की पहचान और रचना निष्ठा में हैं।

4. गजानन माधव 'मुक्तिबोध' और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन -

मुक्तिबोधजी की प्राथमिक रचनाओंमें वैयक्तिकता प्रकृति प्रेम, सौंदर्य, कल्पना को प्रधानता वेदना का भाव दिखाई देता हैं। कविने मालवा का प्राकृतिक सौंदर्य तथा क्षिप्रा के कलकल निनाद से संबंधित चित्रोंके साथ आत्मसंघर्ष का ऐसा स्वरुप वर्णित किया जिसमें वैविध्य और विरोध हैं। उन्होंने निरालाजी की परंपरा को आगे बढाते हुए, यंत्रणा, त्रास, भूख, दरिद्रता, मृत्यु, अवसाद, निराशावाद और शोषित जनों से सहानुभूति का चित्रण अपनी कविताओंमें किया।

उनका लोकप्रिय काव्यसंग्रह हैं - 'चाँद का मुँह टेढ़ा है'। तारसप्तक में उनकी कुछ प्रमुख कविताएँ संकलित हैं।

सर्वप्रथम मुक्तिबोधकी कविताएँ 1943 मे प्रकाशित हुई। उन्होंने तारसप्तक के पूर्व दिए वक्तव्यमें कहा कि, 'क्रमशः मेरा झुकाव मार्क्सवाद की ओर था, और उसीसे मुझे अधिक वैज्ञानिक अधिक मूर्त और तेजस्वी दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।' 4

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 43-44
2. श्री. अरविंद पांडे - हिंदी के प्रमुख कवि रचना और शिल्प से उधृत - पृष्ठ 55
3. श्री. अरविंद पांडे - हिंदी के प्रमुख कवि रचना और शिल्प से उधृत - पृष्ठ 55
4. गजानन माधव मुक्तिबोध - तारसप्तक - पृष्ठ 42

समाज के सत्ताधारी पक्षकी और उनके आडंबरपूर्ण व्यवहारोंकी कटु आलोचना मुक्तिबोध ने की है, उनकी चमक दमक देखकर कवि को लगता हैंकि वह कोई भयंकर स्वप्न देख रहा हैं।

'लगता है
कि समस्त स्वर्गीय चमचमाते आभालोकवाले
इस नगर का निजत्व जादुई
कि रंगीन मात्राओं का प्रदीप्त पूँज यह
नगर है अयथार्थ
पावडरमें सफेद अथवा गुलाबी
छिपे बड़े बड़े चेचक के दाग मुझे दिखते हैं
सभ्यता के चेहरे पर।' 1

फैंटसी कविता मुक्तिबोध जी की विशेषता हैं। वह दिमागी गुहाधकार का औरांग उटांग कविता का अंश हैं। देखिए -

'सत्य के बहाने
स्वयं को चाहते हैं प्रस्थापित करना
अहं को, तथ्य के बहाने
मेरी जीभ एकाएक तालू से चिपकती
अक्ल क्षारयुक्त सी होती है
और मेरी आंखे उन बहस करनेवालों के
कपड़ोंमें छिपी हुई
सघन रहस्यमय लंबी पूँछ देखती
और मैं सोचता हूँ, कैसे सत्य है
ढाँक रखना चाहते है बड़े बड़े नाखून
किसके लिए हैं वे बाघनख
कौन अभागा वह।' 2

मुक्तिबोध ने पूँजीवाद का कड़ा विरोध किया। पूँजीवादी समाज के प्रति कवि घृणा व्यक्त करता हैं।

'तेरे हास में भी रोग कृमि हैं उग्र

तेरा नाश तुझपर क्रुध्द, तुझपर व्यग्र
मेरी ज्वाल जनकी ज्वाल होकर एक
अपनी उष्णता से धो चले अविवेक

---

1. गजानन माधव मुक्तिबोध - चाँद का मुँह टेढा है - पृष्ठ 78-79
2. गजानन माधव मुक्तिबोध - चाँद का मुँह टेढा है - पृष्ठ 17

तू है मरण, तू है रिक्त, तू है व्यर्थ
तेरा ध्वंस केवल एक तेरा अर्थ।' 1

सुमनजी भी इस पूँजीवादियों के जुल्मसे जनता को जागृत करना चाहता है, जुल्मसे त्रस्त लोगोंका वर्णन वे इसप्रकार करते हैं -

'रक्षित है लाज लंगोटीपर
है कंठ बोलते घरर-घरर
आ रही असह दुर्गंध पसीने
और चीथड़ों से झरझर।' 2

मृत्यु और कवि कवितामें कवि मुक्तिबोध कविको कहना चाहता हैंकि मृत्युसे भावुक न होकर उसके नश्वरतापर विचार करके जो जीवन मिला है उसे व्यर्थ न गवाएँ। इसलिए हे कवि नव गीत गाकर तुम जनता के मन में आशा से जीवनमें गति भर दो। जैसे -

'क्षण भंगुरता के इस क्षणमें जीवन की
गति, जीवन का स्वर,
दो सौ वर्ष आयु यदि होती
तो क्या अधिक सुखी होता नर?
इसी अमर धारा के आगे बहने के हित यह सब नश्वर
सृजनशील जीवन के स्वरमें गाओ मरणगीत तुम सुंदर
तुम कवि हो, ये फैले चले मृदुगीत विबल मानव के घरघर
ज्योतित हो मुख नव आशासे, जीवन की गति जीवन का स्वर।' 3

मृत्यु के बारेमें सुमन जी वसंत ऋतुके प्रतीक के रुपमें वर्णन करते हैं -

'नित्य नया जीवन पाने को
इच्छा का ही नाम मरण है
पतझरका आना बसंत के
आवाहन का प्रथम चरण हैं।' 4

चाँद का मुँह टेढ़ा हैं' में कवि यांत्रिकता का वर्णन करते हैं -

'नगर के बीचोबीच
आधी रात अँधेरे की काली स्याह
शिलाओं से बनी हुई
भीतों और अहातोंके, काँच टुकड़े जमे हुए
ऊँचे ऊँचे कंधोंपर चाँदनी फैली हुई सँवलायी झालरें

---

1. गजानन माधव मुक्तिबोध - तारसप्तक - पृष्ठ 61
2. संपादक - भगवत शरण उपाध्याय - शिवमंगलसिंह सुमन - कवीश्री - पृष्ठ 37
3. गजानन माधव मुक्तिबोध - तारसप्तक - पृष्ठ 56
4. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 13

कारखाना, अहाते के उसपार धुम्रमुख चिमनियों के
ऊँचे ऊँचे मीनार, मीनारों के बीचे बी चाँद
का मुँह टेढ़ा है। भयानक स्याह सन तिरपनका
चाँद वह गगनमें करफ्यू है, धरती पर चुपचाप
जहरीली छि: थू है।' 1

कवि मुक्तिबोध शोषण के विरोधमें संघर्ष करना चाहते हैं -

'नगर का अमूर्त सा तिलस्मी आभालोक
शोषण की सभ्यता का राक्षसी दुर्ग रुप
यथार्थ की भित्तिपर समुद्र घटित करता है
रस्ता खत्म होता हैकि संघर्षों के अंगारे
लाल लाल सितारोंसे, बुलाते मुझे पास निज
कभी मांस पेशियों के लौह कर्मरत
मजूर लोहार के अथाह बल
प्रकांड हथौड़ें की दीख पडती है चोट।' 2

पूँजीवादी वर्ग रुढ़ियों को बदलना नहीं चाहता। वह अपनी मृतप्राय संस्कृति को सुरक्षित रखना चाहता है ताकि उसके निजी स्वार्थ की रक्षा हो। सुमन जी इस शाश्वत सत्य से परिचित है और उसे नष्ट करना चाहते हैं -

'जब मैं आगे बढा विश्व ज्वालाका अलिंगन करने
जब मैं चला सिंधु की सत्तामें अस्तित्व बिंदू लय करने
मृतप्राय संस्कृतिके हामी बोले, मुख मोड़ जाते हो?
अग्नि गान गाकर तुम शाश्वत सत्यार्कको छोडे जाते हो
गोया शाश्वत सत्य क्लीव बनकर जीवन यापन करना है
मानवता मिट जाय हमें तो बस ठंडी आहें भरना है।' 3

डॉ दीक्षित मुक्तिबोध की काव्य विशेषताके बारेमें लिखते हैं 'मुक्तिबोध की कविताएँ झूठ को स्वीकार नहीं करती, उसका पोल खोलती हैं। निबिड़ अंधकार के तेज प्रकाश की कुरुपता का दर्शन करती हैं।' 4 उदा.

'समस्या एक
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामोंमें
सभी मानव

---

1. गजानन माधव मुक्तिबोध - चाँद का मुँह टेढा है - पृष्ठ 23
2. गजानन माधव मुक्तिबोध - चाँद का मुँह टेढा है - पृष्ठ 82
3. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 83
4. डॉ. छोटेलाल दीक्षित - आधुनिक काव्यमें सौंदर्यबोध के विविध आयाम - पृष्ठ 148

सुखी सुंदर व शोषण मुक्त कब होंगे?
कि मैं अपनी अधूरी दिर्घ कविताके उमककर
जन्म लेना चाहता फिर से
कि व्यक्तित्वांतरित होकर
नये सिरेसे समझना और जीना चाहता हूँ सच।' 1

5. केदारनाथ अग्रवाल और डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन -

केदारनाथजी का 'नींद के बादल' प्रथम प्रकाशित काव्यसंग्रह हैं। सुमनजी के 'हिल्लोल' की तरह इसमें भी प्रणयीचित्रण तथा वैयक्तिकता समावेश हो गया हैं। केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी कवि के रुपमें हिंदी साहित्यमें जाने पहचाने जाते हैं। प्रगतिवादी कविताओंमें केदारनाथने प्रणयचित्रण को बहिष्कृत नहीं किया हैं। प्रकृति वर्णन की प्रणयी भावना और कर्म निष्ठता की प्रेरणा देनेवाले चित्र उनके प्रगतिवादी काव्यमें चित्रित हैं।

समाजमें व्याप्त विषमता, स्वतंत्र आंदोलन से प्रेरित लोग उन्हें प्रेरित करनेके उद्देशसे कवि अपने आत्मसंकीर्ण घेरेसे बाहर निकलकर जीवन को अपनी कविता का विषय बनाया -

'जितना जो कहा कभी
सुधियों ने छवियोंने
स्वप्नभरी अँखियोंने
मैंने वह दिया सभी
कविता को अपनी
जितना जो मिला कभी
गानलुब्ध बादल से
मौन मुग्ध पायल से
मैंने वह दिया सभी
कविता को अपनी।' 2

सुमनजी ने भी कविता का क्षेत्र सब विश्वमें व्याप्त है इसका वर्णन इसतरह किया है -

'अंबुधि में भरे हैं गान
अंबर में भरे हैं गान
धरती में भरे हैं गान
कन कन में भरे हैं गान।' 3

---

1. गजानन माधव मुक्तिबोध - चाँद का मुँह टेढा है - पृष्ठ 141
2. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिन्दी कविता से उधृत - पृष्ठ 102
3. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिन्दी कविता के उधृत - पृष्ठ 110

सुमनजी के मतानुसार कविता पंचतत्वमें भरी हुई हैं।

प्रगतिशील कवि दृष्टि मुख्य रुपसे श्रमिक तथा निम्नवर्ग की ओर गई है। केदारनाथ अग्रवालने बड़े बड़े नगरों का विलास वैभव श्रमजीवी की हड्डी पर ही आधारित माना हैं। अपनी 'कानपुर' शीर्षक कवितामें कहा हैंकि -

'घाट, धर्मशालें, अदालतें
विद्यालय, वैश्यालय सारे
होटल दफ्तर बूचड़खाने
मंदिर, मसिजद हाट, सिनेमा
श्रमजीवी की उस हड्डी से
टिके हुए हैं जिस हड्डी को
सभ्य आदमी के समाज ने
टेढी करके मोड़ दिया हैं।' ।

प्रगतिशील कवि अतित की परंपाको श्रध्दांजली अर्पित करता है और नवनिर्माण में सक्रीय भाग लेता हैं। इसके विपरीत परंपरा को जो नवनिर्माण के मार्ग की बाधा है उसे ठुकराना चाहता हैं। केदारनाथजीने विश्वास व्यक्त किया हैंकि, नवयुग की गंगा प्राचीन को डुबाकर अवश्य की नए संसार को जन्म देगी -

'युग की गंगा
सब प्राचीन डुबायेगी ही
नयी बस्तियाँ
शांति निकेतन
नव संसार बसायेगी ही।' 2

सुमनजी नवनिर्माण के लिए जागृत जनता का चित्रण करते हैं -

'आज दिशी वहेसिए को
उपवन को ललकारा
कातरकंठ क्रौंचिनी चीखी
कहाँ गया हत्यारा
कण कण में विद्रोह जग पड़ा
शांति क्रांति बन बैठी
अंकुर अंकुर शीश उठाए
डाल डाल तन बैठी।' 3

1.
2. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिन्दी कविता से उधृत - पृष्ठ 121
3. डॉ. सुमन - विश्वास बढता ही गया - पृष्ठ 42

... KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

नेताओंके बारेमें सुमनजी के विचार है -

'दोनों के नेतागण बनते
अधिकारों के हामी
किंतु एक दिन को भी
हमको अखरी नहीं गुलामी
दानों को मुहताज हुए गए
दर दर बने भिखारी
भूख अकाल महामारी से
दोनोंकी लाचारी
आज धार्मिक बना धर्म का नाम मिटानेवाला
मेरा देश जल रहा है कोई नहीं बुझानेवाला।' 1

केदारनाथजी ने भी राजनीति पर तीखा व्यंग्य किया हैं।

'कामधेनु-सी कांग्रेस अब
सुरसा जैसा मुँह बाये है
शासन के अधिकारी नेता
डायर की वर्दी पहने है
सत्य अहिंसा के अवतारी
अब हिंसा का रुप धरे है
अंग्रेजी पिस्तोल चलाकर
कफन लपेटी आजादी को
जनसेवक का खून चटाकर
रामराज्य की कथा सुनाकर
सौ प्रयास से जिला रहे हैं।' 2

प्रगतिवादी कवि क्रांति की मुख्य शक्ति किसान और मजदूर वर्ग मानता हैं। केदारनाथ किसानसे नामक कवितामें कहते हैंकि -

'अपनी कुटिया की चिनगी से
सबमें आग लगाये जा
जर्जर दुनिया के ढाँचे को
धमधम आज जलाये जा
शोषण की प्रत्येक पंथ का
अधियर शहन मिटाये जा

---

1. डॉ. सुमन - विश्वास बढ़ता ही गया - पृष्ठ 53
2. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिन्दी कविता से उधृत - पृष्ठ 131

नये जन्म का नया उजाला
धरती पर बरसाये जा।' 1

डॉ. सुमन के काव्यका मुख्य स्वर प्रेम हैं। सुमनजीने प्रेम को अपने काव्यमें सर्वोच्च स्थान दिया हैं। उनकी प्रारंभिक रचना 'हिल्लोल' की रचना प्रणयसे ही प्रारंभ होता हैं। देखिए -

'जब इस पथपर चलते चलते
अपने प्रिय को पा जाउँगा
चिर अंत कलांत सत्वर
उसकी गोदी में मैं सो जाउँगा
हिम कण सा किरणेंमें मिलकर
उज्वल प्रकाश बन जाउँगा
जग याद करेगा व्यथा कथा
मैं तो प्रियमें मिल जाउँगा।' 2

केदारनाथजी ने भी अपने काव्यमें प्रेमको महत्वपूर्ण स्थान दिया है, कवि कहता हैंकि, प्रत्येक पदार्थ, पशु-पक्षी आदि उन्मुक्त होकर अपने प्रेम की निर्भिक व्यंजना करते है, तो फिर मनुष्य ही प्रेम को क्यों छिपाए?

'आज वसंत विकास हास है उपवन हैं सरसीले
फुल आम की डाल और वन सरसों से हैं पीले
जब की प्रेम के पागल कोकिल गीत प्रेम के गाते
तब क्यों मैं ही प्रेम छिपाऊँ?
जिन कलियोंने प्रेम छिपाया वे झूँठी कहलाई
जिन नदियोंने प्रेम छिपाया, वे सूखी अकुलाई
जिन आँखोने प्रीत छिपाई वे रोई पछताई
तब क्यों मैं ही प्रेम छिपाऊँ।' 3

प्रेम वर्णन के बाद सुमनजीने विरह मिलन के सुंदर चित्र अपने काव्यमें निर्माण किय हैं। 'पर आँख नहीं भरी' मे सुमनजी कहते हैंकि -

'खिड़की से झीनी झीनी
बौछार बिखरती आई
अनायास किसी निठुरकी
याद दृगोंमें छाई

---

1. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिन्दी कवितासे उध्रृत - पृष्ठ 131
2. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 52
3. डॉ. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिंदी कविता - पृष्ठ 209

पानी बरसा कहीं
किसी का बहा आँख का काजल
आज रातभरे बरसे बादल।' 1

'चाँदनी छाई, किसी की याद आई' में सुमन जी कहते हैं -

'आज तक पथ का अकेलापन
कभी अखरा न इतना
जागती आँखे संजोती मधुर सपना
लुट गई छिन में जनम भरकी कमाई
चाँदनी छाई किसी की याद आई।' 2

श्री. केदारनाथ का कहना हैंकि,

'रात रात भर और दिन दिन भर
एक एक पल औ छिन छिन पर
तेरा ही साथ चाहिए।' 3

कवि अपनी प्रियतमा को जी भरके देखना चाहते हैं -

'तुम आओ तो रससे पूरित अंगूरीतन देखूँ
लाल गुलाब कपालों के मैं रसमय चुंबन देखूँ
मेरा भाग्य उठाती ऊपर लज्जित चितवन देखूँ
भरभर लोचन देखूँ, प्यारी भर भर लोचन देखूँ।' 4

केदारनाथ अग्रवाल ने कोहरे को पराधीन बनानेवाली विदेशी साम्राज्यवादी शक्ति के रुपमें चित्रित किया हैं और दिनकर को क्रांति की नवीन शक्ति का रुप माना हैं। कोहरे का साम्राज्यवादी रुप के बारेमें केदारनाथजी कहते हैंकि,

'शिशिर निशा के दुर्दम घोर तिमिरमें
यह परदेसी भारी लंबा कोहरा
धीरे धीरे प्रिय धरती पर उतरा
यहाँ वहाँ फिर ठौर ठौर पर ठहरा
घनीभूत हो गया अधिक ही ऐसा

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 24
2. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 31
3. डॉ. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिंदी कविता से उध्दृत - पृष्ठ 211
4. डॉ. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिंदी कविता से उध्दृत - पृष्ठ 212

नहीं दिखाई देता है अब आगे
प्यारे घर, वन, खेत, गाँव सब खोये
निज स्वत्व की नहीं निशानी मिलती'। 1

6. **रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन -**

हिंदी काव्यके क्षेत्रमें जब छायावादी कविता का जोर समाप्त हो रहा था तब दिनकर जी अपनी प्रवाहमयी और ओजस्वी वाणी को कविता के रुपमें लेकर प्रकट हुए। इस प्रकार वे छायावादोत्तर काल के कवि हैं। दिनकर जी को मार्क्सवादी परंपरा के कवि नहीं कहा जा सकता। लेकिन उन्होंने सामंतोके द्वारा होनेवाला शोषण, दलितोंके कष्टोंको अपने काव्यमें अभिव्यक्ति दी, यह प्रगतिवादी विशेषताएँ है, इसलिए उनकी रचनाएँ और उन्हें प्रगतिवादी कहा जाता हैं।

दिनकर की जनजागरण की विचारधारा बड़े ही तीखे और तीव्र शब्दोंमें व्यक्त हुई हैं। श्रीरामवृक्ष बेनी पुरी का मत है, हमारे क्रांतियुग का संपूर्ण प्रतिनिधित्व कवितामें इस समय दिनकर कर रहा हैं। क्रांतिकारी को जिन जिन हृदयमंथनों से गुजरना पड़ता हैं, दिनकर की कविता उसकी सच्ची तस्वीर हैं।

कवि सुमन शोषित जनता, तथा दलित वर्ग का दुख अपना मानते हैं। यह वेदना पीड़ा सिर्फ उनके काव्य के विषय बनकर नहीं रहे अपितु उसमें सक्रीयता आ गयी। इस शोषण पीडा को दूर करने के लिए कवि जनताको जागृत करता है, सिर्फ वैचारिक जागृति नहीं तो शस्त्रबल से इन दुष्टोंका नाश करनेका संदेश देते हैं, अतः वे भी उस निम्नस्तरके लोगोंका नेतृत्व करेंगे। इसलिए कवि उन्हें आवाहन देता हैकि -

'अपने को पहचान गये अब
आज विश्व के पराधीन पददलित
मानगर्विता जनता की
नई जवानी
नई रवानी
नई कहानी
अंतिम बलि की हुई तयारी
मर मिटने की आन हमारी।' 2

---

1. डॉ. दुर्गाप्रसाद झाला - प्रगतिशील हिंदी कविता से उधृत - पृष्ठ 212
2. डॉ. भगवत शरण उपाध्याय - कविश्री - पृष्ठ 56

कवि दिनकर ने स्वातंत्र्य मिलनेके बाद समाजमें व्याप्त आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विषमाओंके प्रति जन नेताओं को फटकारा हैं।

'उठ मंदिर के दरवाजे से
जोर लगा खेतों में अपने
नेता नहीं भूजा करती है
सत्य सदा जीवनके सपने
नेताओं का मोह मुढ़
केवल तुझको ठगनेवाला है
लगा जोर अपने भविष्य का
बन तु आप प्रणेता।' 1

सुमनजी ने पूजा, नमाज, प्रार्थना को व्यर्थ मानकर मेहनत करनेका संदेश दिया है।

'सामधेनी' में दिनकरजी का युगद्रष्टा रुप अधिक निखरा हैं। भयंकर दमन के क्षणोंमें निर्माण का स्वर विद्रोह के उद्‌घोष के रुपमें सुनने को मिलता है। 'दिल्ली और मास्को' कवितामें कवि भारतीय समाजवाद की स्थापना करना चाहता हैं -

'दिल्ली के नीचे मर्दित अभिमान नहीं केवल है
दबा हुआ शत लक्ष नरों का अन्न वस्त्र धन बला है
दबी हुई इसके नीचे भारत की लाल भवानी
जो तोडे यह दुर्ग वही है समता का अभिमानी।' 2

कविता कैसी बनाते हैं, इस बारेमें कवि का कहना हैंकि -

असल में हम कवि नहीं
शोक की संतान है
हम गीत नहीं बनाते
पंक्तियोंमें वेदना के
शिशुओं को जनते हैं
झरनों का कल कल
पत्तों की मर्मर
और फुलों की आवाज
ये गरीब की आह से बनते हैं।' 3

---

1. रामधारी सिंह दिनकर - नीम के पत्ते - पृष्ठ 17
2. रामधारी सिंह दिनकर - सामधेनी - पृष्ठ 17
3. रामधारी सिंह दिनकर - हुंकार - पृष्ठ 24

दिनकरजी को राष्ट्र कवि भी कहा जाता है। उनकी कविता जाग रहे हम वीर जवान में वे कहते है -

'हम शकारि विक्रमादित्य है
अरि दल को दलनेवाले
रणमें जमीं नहीं
दुश्मन की लाशों पर चलनेवाली
हम अर्जुन हम भीम
शांति के लिए जगतमें जीते है
मगर शत्रु हठ करें अगर लहू वक्षका पीते हैं
हम है शिवा प्रताप, रोटियाँ भले घासकी
खाएँगे, मगर किसीं जुल्मी के आगे
मस्तक नहीं झुकायेंगे।' 1

कवि सुमन की कुछ कविताएँ राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत हैं, सुन रहे हो क्रांतिकी आवाजमें कवि कहता हैं कि -

'चूसकर जिसको निचोड़ा
रक्त भी जिसका न छोड़ा
वह लिये हँसिया हथौड़ा
कर चुके है शेषकन की कीली ढ़ीली आज
सुन रहे हो क्रांतिकी आवाज।' 2

7. डा. रामविलास शर्मा और डा. शिवमंगलसिंह सुमन -

प्रगतिशील चिंतकोंमें रामविलास शर्मा का महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। डा. शर्मा के दृष्टिमें प्रगतिशील साहित्य वह है जो समाज को आगे बढ़ाये तथा उसका उर्ध्वमुखी विकास करें।' 3 मार्क्सवादी विचारधारासे प्रभावित प्रगतिशील दृष्टि वर्गोंमें विभाजित करनेवाले धर्मका विरोध करती हैं।

डा. रामविलास शर्मा के मतानुसार - 'श्रमिक की कोई जाति नहीं होती, वह केवल उस पृथ्वीका पुत्र है जिसकी धूलमें सनकर संघर्ष करता हैं -

'धरती के पुत्र की
होगी कौन जाती
कौन मत कहो कौन धर्म?
धूलि भरा धरती का पुत्र हैं।'' 4

---

1. रामधारी सिंह दिनकर - हुंकार - पृष्ठ 28
2. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 94
3. डॉ. तनुजा तिवारी - प्रगतिशील कविताओंमें सोंदर्य चिंतन - पृष्ठ 136
4. डॉ. रामविलास शर्मा - तारसप्तक - पृष्ठ 232

कवि सुमन भी जातिभेद, वर्णभेद के विरोधक रहे। उनका कहना हैंकि -

'जाति धर्म के भेद कहाँ सब
बँधे भूख की डोर
हिंदू मुस्लिम खींच रहे है
अपनी अपनी ओर।' 1

शोषण के बारेमें डा. शर्मा कहते हैंकि -

क्षुद्र है मानव द्वारा मानव का उत्पीड़न
वर्बर फासिस्टवाद को यही चुनौती दी
साम्राज्यवाद से युध्द किया आजीवन
उन मेरे धान के खेतोंमें दिन रात भूख
बसभूख महामारी का आकुल कंदन।' 2

कवि सुमन भूख से त्रस्त श्रतिक का चित्रण करते हैं -

'अधर सूखे, गाल पिचके, दीन कटोरलीन आँखे
शलभ बेसुध छटपटाते क्लांत मन विछिन्न पाँखे
मुर्दनी वातावरणमें धुएँ की धूर्पित घुटन सी
दर बदर फैली हुई बदबू विकट शव के मुंडन सी
खो गयी मानव हृदय की सरसता और जीने के लिए जीवन तरसता।' 3

मार्क्सवादी सामंतोंसे संघर्ष करता है और सर्वहारा वर्ग को मुक्ति दिलाना चाहता हैं। इसी सर्वहारा वर्ग के जीने के सभी साधन छीन जाते हैं तब वह विवश होकर विद्रोह कर देता हैं। सर्वहारा वर्ग संघर्षरत चेतना को अपना धर्म मानकर उसी के तत्वोंपर चलाता है -

'किसने किया इन्हीं खतों में प्राण विसर्जन?
किसकी मिट्टी पर यह खेतों की हरियाली?
किसके लहु की फागुन में यह लाली।' 4

सुमनजी जेठ की जलती दुपार में एक किसान को खेत गोड़ते देखकर उसके प्रति अपार करुणा तथा उसकी दृढ़ताका गौरव करते हैं -

'हाथ हैं दोनों सधे से
गीत प्राणों के रुंधे से

---

1. डॉ. सुमन - पलयसृजन - पृष्ठ 82
2. डॉ. रामविलास शर्मा - तारसप्तक - पृष्ठ 247
3. भगवत शरण उपाध्याय - कवीश्री : सुमन - पृष्ठ 61
4. डॉ. रामविलास शर्मा - तारसप्तक - पृष्ठ 258

और उसकी मुठमें विश्वास
जीवन के बँधे से
धकधकाती धरणि थरथर
उगलता अंगार अंबर
भुन रहे तलुवे तपस्वी सा
खडा वह आज तन कर
शून्य सा मन चूर है तन
पर न जाता वार खाली
चल रही उसकी कुदाली।' 1

डॉ. रामविलास शर्मा ने ऋतुओंका सुंदर वर्णन किया हैं। कवि को बादलों की गडगडाहट नगाड़ोंसी प्रतीत होती हैं, जिसपर बिजली का नृत्य और फुहारों की मुस्कान अपेक्षित रहती है, वे बादलों की पालकी में बैठकर आम्रपाली वर्षा आते देखकर कहते हैं -

'बज रहे नगाड़े आकाश में
कौंध रही है अक्षितिज
फुहारों की स्निग्ध मुस्कान
बादलों की पालकी पर सवार
आ रही है आम्रपाली वर्षा।' 2

ऋतुपरक वर्णन में सुमनजी असामान्य हैं। उनकी कवितामें सभी ऋतुओंका वर्णन मिलता हैं। ग्रीष्म ऋतु के प्रचंड गर्मी के पश्चात जब आकाशमें काले काले बादल छा जाते हैं, तो सभी जीव जंतु एवं पशु प्राणी आनंदविभोर हो जाते हैं, और कविता की कुछ पंक्तियाँ अपने आप फूट पडती हैं -

'आषाढ का पहला दिवस
करता विवश
उमडी घटाको देखकर
चूँमे लहरते केशको
पी लूँ तपन, पीलूँ तपन
गदरा उठूँ, इतरा उठूँ
पीतांबरी आकाश में उलझी हुई
नलांबरी के छोर सा टपकूँ निबौरी सानिपट
गिरकूँ बिसुध बन मोर सा।' 3

---

1. डॉ. सुमन - प्रलयसृजन - पृष्ठ 21
2. डॉ. सुमन - मिट्टी की बारात - पृष्ठ 12
3. डॉ. तनुजा तिवारी - प्रगतिशील कवितामें सौंदर्य चिंतन से उधृत - पृष्ठ 139

सुमनजीने अपनी कवितामें प्रकृति का वर्णन भी विविध रुपोंमें किया है -

'सुलगता आकाश, धरती पुलकमान
आज हरियाली गई पथ भूल
हत उमंगों का भला कोई ठिकाना
खो गई सरि खो गए दो फुल
तप्त अंतरमें घुमड़ते तरल तामय प्राण
गल गए पाषाण
वर्ष भरकी वेदना सिमटी
कि लहराया अतुल उन्मुक्त पारावर।' 1

डॉ. रामविलास शर्मा प्रकृतिका वर्णन इसतरह करते हैं -

'बौराए आम तले आ बैठी, कांखों में
हाथ दबा जाड़े की उन्मत सी धूप
बैठी है आमराइयों की छांह में
दमयंती सी आषाढ की दोपहर
और ताक रही है स्वर्ण हंस सूरज को
जो उड़ गया चोंचमें दबा
बादल का उत्तरीय।' 2

8. शमशेर बहादुर सिंह और डा.शिवमंगलसिंह सुमन -

कवि अक्षयवट को क्रांतिका कुंभ मानते हैं। उसे कवि क्रांति निर्माण की जननी मानता है -

'देखता है मौन अक्षयवट
क्रांति का इक वृध्द कुंभ
क्रांतिमय निर्माण का इक वृध्द पर्व
चमकती असिधार सी है
धारगंगा की
हरहरा कर उठ रहा है
नव जन महासागर।' 3

कवि सुमन भी शोषण अन्याय, अत्याचार दूर करने के लिए क्रांतिको आवश्यक मानते हैं -

'ठहर जाओ ध्वंस कर लूँ
मै विषम संसार पहले
और मानव मानको

---

1. डॉ. सुमन - पर आँख नहीं भरी - पृष्ठ 28
2. डॉ. तनुजा तिवारी - प्रगतिशील कवितामें सौंदर्य चिंतन से उधृत - पृष्ठ 140
3. शमशेर बहादुर सिंह - कुछ कविताएँ - पृष्ठ 35

उपलब्ध कर दूँ प्यार पहले
कर्मपथ पर तुम न डालो
अब अधिक व्याघात।' 1

अबतक हमनें प्रगतिवाद के अन्य कवि और सुमन की काव्य के सम विचारोंका अभ्यास किया।

प्रगतिवादी धाराका नवनिर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा, और प्रत्येक कवियोंने अपने रुचिनुसार इसमें योगदान भी दिया। प्रगतिवादकी विशेषता शोषितों से सहानुभूति, शोषकोंके प्रति विद्रोह, पुरानी परंपरा, रुढियोंका विरोध, आर्थिक और सामाजिक चेतना संबंधी विचार, रुसी साम्यवाद से प्रभावित, ईश्वर और जग निर्माण संबंधी विचार आस्था और आशा का स्वर आदि।

प्रगतिवादी कवियोंने जो काव्य लिखा उसमें कवि उपर्युक्त सभी विशेषताओंको नहीं ग्रहण कर पायें। लेकिन शिवमंगल सिंह सुमन के काव्यमें इन सभी विशेषताओंका सम्यक् चित्रण हुआ। उनका कहना हैंकि - मेरे उरमें जो निहित व्यथा, कविता तो उसकी एक कथा।' 2 उनकी कवितामें मजदूर, किसान का जो सजीव चित्रण मिलता है वह असामान्य है। उनकी दयनीय स्थिति, फिर भी उनकी जीने की उमंग, उनके श्रम, तथा अत्याचार सहते रहने की आदत सुमन जी के काव्य के एक एक विषय हैं। यह अन्याय, अत्याचार सहने की उन्हें आदत सी पड़ी थी, उसके विरोधमें विद्रोह करनेकी कवि सुमन ने उन्हें उनके मनमें दबे हुए विचारोंको वाणी दी। उनको क्रांतिके लिए जागृत किया। उसीतरह सर्वहारा वर्ग का मार्मिक चित्रण सुमन का महत्व बढ़ाता हैं।

इन्हीं सभी कारणोंसे मेरी स्पष्ट धारणा हैकि डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन प्रगतिवादी विचारधारा के श्रेष्ठ कवि है। हालांकि बाकी सभी आदरणीय जरुर हैं।

सुमनजी को श्रेष्ठता प्रदान करनेमें उनकी भाषा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। जनसाधारण के लिए किसी उच्चस्तर की भाषा का प्रयोग न करके सुमनजीनें जनसाधारण की भाषाका प्रयोग किया, जो अवर्णनीय हैं। इसी कारण सुमनकी काव्यमें वास्तविकता दिखाई देती हैं और उनकी श्रेष्ठ प्रतिमामें चार चाँद लगा देती हैं।

सुमनजी प्रकृति के भी अनन्य पुजारी हैं। उन्हें प्रकृति अपने रंगमें रंग देती हैं और कवि उसके साथ तादात्म्य का अनुभव करता हैं।

---

1. डॉ. सुमन - जीवन के गान - पृष्ठ 54
2. डॉ. सुमन - हिल्लोल - पृष्ठ 22

भाषिक सर्जनात्मक दृष्टिसे भी सुमनजी एक उच्चकोटि के कलाकार हैं। भाषापर भी सुमनजीका पूरा अधिकार हैं। मार्क्सवादी सिध्दांतोंको जनजीवनमें प्रवाहित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने किया।

सुमनजी के संपूर्ण काव्य इतिहासपर दृष्टिपात करनेसे यह स्पष्ट होता हैंकि, सुमनजी इस युगके प्रतिनिधि कवि है, श्रेष्ठ कवि हैं। गंभीर स्वानुभूति, मनन, चिंतन, व्यापक कल्पना, सूक्ष्म निरीक्षण, और वेदना पीडा के कुशल चितेरे हैं।

सुमनजीका काव्य औदार्य और सौंदर्यसे परिपूर्ण हैं। युग सभी वैयक्तिक तथा सामाजिक समस्याएँ किसी न किसी रुपमें उनकी कवितामें व्यक्त हुई हैं। सामयिक स्वरोंके प्रति कवि की काव्य चेतना जागृत दिखाई देती हैं।

सुमनजीका काव्य किसी साहित्यिक वाद के चक्रमें बंदी नहीं है, फिर भी उन वादोंकी झलक उनकी काव्यमें दिखाई देती हैं।

सुमनजी का अपना एक निराला अंदाज हैं। उक्त कवियोंमें यदि नागार्जुन अपने साफ तीखे और व्यंग्य के लिए इस धारामें अनुपम हैं, केदारनाथ अग्रवाल अपने बिंबो, चित्रों और ग्राम जीवनके सहज चित्रणके लिए विख्यात है तो कवि डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन भी अपनी प्रवाहपूर्ण अभिव्यंजना, साम्यवादी दर्शन को भारतीय संस्कृति और चेतनामें घोलकर जनता को जागृत करनेमें श्रेष्ठ ठहरते हैं।

अंतमें हम कह सकते हैंकि, कविवर डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन युगदृष्टा, जननेता, कुशल वक्ता, युगप्रणेता, श्रेष्ठ, सफल कवि एवं गीतकार के रुपमें याद रखे जायेंगे।